~~महाभारत का कालनिर्धारण~~

महाभारत का कालनिर्धारण → महाभारत की रचना कब हुई?

यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है

जिसका उत्तर पाने का प्रयास अनेक पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने किया है। इन विद्वानों के निष्कर्षों में इतनी भिन्नता है कि किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना असंभव सा प्रतीत होता है। फिर भी इन गणनाओं के विषय में

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। काल-गणना में भिन्नता का एक कारण यह भी रहा है कि विद्वानों ने महाभारत के तीन प्रकार के विकास क्रमों का उल्लेख किया है। इस सम्बन्ध में पूर्व में पर्याप्त चर्चा की जा चुकी है और इस मत को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। लक्षश्लोकात्मक महाभारत कृष्णद्वैपायन वेदव्यास की अमरकृति है। इसे विकास परम्परा का अंग नहीं माना जा सकता है। हाँ, यह अवश्य हो सकता है कि कालान्तर में कुछ श्लोक विलुप्त हो गए हों और कुछ प्रक्षिप्त श्लोक अस्तित्व में आये हों, परन्तु इससे इस तथ्य को नहीं झूठलाया जा सकता है कि शतसाहस्री संहिता वेदव्यास की कृति है।

विद्वानों ने महाभारत के कालनिर्धारण का जो प्रयास किया है वह मुख्यतः पूर्वसीमा और अपरसीमा निर्धारित करने से सम्बन्धित है। इनका उल्लेख किया जा रहा है —

(i) ईसा की ११ वीं शताब्दी में क्षेमेन्द्र ने भारतमञ्जरी का प्रणयन किया। इसमें महाभारत का संक्षेप है। प्रो० बूल्मर ने इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रतियों की महाभहाभारत के साथ विस्तृत तुलना करके दिखाया है कि यह महाभारत से बहुत भिन्न नहीं है।

(ii) ८ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में परमपूज्यपाद आदि शंकराचार्य ने यह स्पष्ट घोषणा की कि महाभारत धर्मशिक्षा के लिए स्मृति के स्थान पर है।

(iii) ८ वीं सदी के पूर्वार्ध में वेदमर्मज्ञ कुमारिलभट्ट ने अपने तन्त्रवार्तिक में महाभारत के प्रायः सभी पर्वों से उद्धरण लिए हैं।

(iv) सातवीं शताब्दी के ग्रन्थकारों में सुबन्धु और बाण का नाम

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

बड़े आदर के साथ लिया जाता है। ये दोनों महाकवि महाभारत से परिचित ही नहीं थे, उन्होंने इससे अपनी काव्य-परम्परा को समृद्ध भी किया।

(v) सातवीं शताब्दी में ही चालुक्य नरेश पुलकेशिन का ऐहोल अभिलेख प्राप्त होता है जिसमें महाभारत का उल्लेख प्राप्त होता है। इसमें कहा गया है कि ~~महाभारत~~ महाभारत-युद्ध को बीते हुए उस समय 3735 वर्ष बीत चुके हैं। इसके अनुसार युद्ध की तिथि 3102 ई०पू० आयेगी।

(vi) भारत के दूरदेशीय कम्बोज नामक उपनिवेश के लगभग छठी शती के एक शिलालेख में उत्कीर्ण है कि वहाँ के एक मन्दिर को रामायण और महाभारत की प्रतियाँ भेंट की गई थीं। इतना ही नहीं, दाता ने उनके निरन्तर पाठ होते रहने का प्रबन्ध कर दिया था।

(vii) षष्ठ शताब्दी में महाभारत जावा और बाली द्वीपों में विद्यमान था। इसी समय इस आर्षग्रन्थ का अनुवाद वहाँ की प्राचीनतम कविभाषा में हुआ था। कविभाषा में अनुदित आदि, विराट, उद्योग, भीष्म, आश्रमवासी, मुसल, प्रस्थानिक और स्वर्गारोहण ये आठ पर्व आज भी वहाँ सुरक्षित हैं, जिनको कलकत्ता के संस्करण से मिलान करने पर लोकमान्य तिलक ने सर्वान्त शुद्ध बताया है। इससे प्रतीत होता है षष्ठ शती तक महाभारत को इतनी लोकविश्रुति मिल चुकी थी कि उसका प्रचार विदेशों में होने लगा।

(viii) चौथी और पाँचवीं शताब्दी के भू-दान के लेख-पत्रों में महाभारत को स्मृति (धर्मशास्त्र) के नाम से उद्धृत किया गया है।

(ix) गुप्त शिलालेखों में एक शिलालेख, जिसका समय इतिहासकारों ने 445 ई० से 462 ई० के मध्य निर्धारित किया है में स्पष्ट रूप से उल्लखित है कि महाभारत में निश्चय ही

Scanned with CamScanner

एक लाख श्लोक हैं और इसके रचयिता पराशरपुत्र वेदव्यास हैं।

(x) बौद्धधर्मविषयक संस्कृत की चीनी भाषा में अनुदित कुछ पुस्तकें उपलब्ध हुई हैं। भारत का चीन के साथ इस सांस्कृतिक मैत्री का समय लगभग दूसरी शताब्दी ई॰पू॰ से है। विद्वानों का अभिमत है कि ये पुस्तकें ईसा की दूसरी शताब्दी में चीन को प्रवासित हो चुकी थीं। इन अनुदित पुस्तकों में महाभारत को बड़े आदर भाव से स्मरण किया गया है।

(xi) डायन क्राइसस्टन का एक साक्ष्य मिलता है कि लाख श्लोकों वाला महाभारत सन् 50 ई॰ में दक्षिण भारत में सुप्रसिद्ध था। इसका उल्लेख चिन्तामणि विनायक वैद्य ने अपनी 'महाभारतमीमांसा' में की है।

(xii) ई॰ की प्रथम शताब्दी में बौद्धकवि अश्वघोष ने वज्रसूचिकोपनिषद् की रचना की। यह व्याख्यान ग्रन्थ सौन्दरानन्द और बुद्धचरित से पृथक् रचना है। इस व्याख्यान ग्रन्थ में महाभारत और हरिवंश से श्लोक उद्धृत हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि महाभारत का अस्तित्व पुराना है और यह भी प्रमाणित होता है कि ईसा की प्रथम शताब्दी में 'हरिवंश' महाभारत के साथ सम्बद्ध था।

(xiii) कविकुलगुरु कालिदास ने ई॰पू॰ प्रथम शताब्दी में अनेक काव्यों का प्रणयन किया। इसमें अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। इसकी कथा महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान से ली गई है।

(xiv) चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आनेवाले यूनानी राजदूत मेगस्थनीस ने अपने भारत विषयक ग्रन्थ 'इंडिका' में लिखा है कि हिरेक्लीज अपने मूल पुरुष डायोनिसस से पन्द्रहवाँ था और उसकी पूजा मथुरा निवासी आदर के साथ करते थे। हिरेक्लीज से श्रीकृष्ण का ही बोध होता है, जो महाभारत के

Scanned with CamScanner

अनुसार दक्ष प्रजापति से पन्द्रहवें पुरुष थे (अनुशासन पर्व/147/25-3) इस ग्रीक राजदूत ने अपने ग्रन्थ में यह भी बतलाया है कि कृष्ण और चन्द्रगुप्त मौर्य के 138 पीढ़ियों का अन्तर है। अगर हम इसे 21 वर्ष प्रति पीढ़ी की दर से गणना करें तो ~~यह समय~~ कृष्ण का समय चन्द्रगुप्त मौर्य से 2898 ~~वर्ष का है।~~ ठहरता है। इतिहासकारों ने चन्द्रगुप्त मौर्य का समय 320 ई॰पू॰ - 298 ई॰पू॰ निर्धारित किया है। इस प्रकार श्रीकृष्ण का समय 3118 ई॰पू॰ के लगभग है- ऐसा सिद्ध होता है। महर्षि व्यास और श्रीकृष्ण समकालीन थे। स्पष्ट है इसी के आस-पास महाभारत की रचना हुई होगी।

(xv) संस्कृत के आदि नाटककार महाकवि भास ने 13 नाटकों का प्रणयन किया। इन नाटकों में अधिकांश के कथानक महाभारत से लिए गए हैं। प्रायः सभी विद्वान् इस बात में एकमत हैं कि इनका समय ई॰पू॰ 450 के आस-पास है। स्पष्ट है इस समय उपाख्यानसहित महाभारत लोकप्रियता को प्राप्त कर चुका था।

(xvi) अष्टाध्यायीकार पाणिनि ने युधिष्ठिर, भीम, विदुर आदि महाभारत के पात्रों की व्युत्पत्ति दी है। इन्होंने महाभारत शब्द की सिद्धि भी दी है। पाणिनि का समय ई॰पू॰ पाँचवीं शताब्दी में सुनिश्चित है।

(xvii) महाभारत के शान्तिपर्व में भगवान विष्णु के दश अवतारों का उल्लेख प्राप्त होता है। इन अवतारों में बुद्ध का नाम नहीं है। कृष्ण के तुरन्त बाद कल्कि अवतार का निर्देश महाभारत में है। इस प्रकार महाभारत बुद्धपूर्व युग की रचना है। बुद्ध का समय ई॰पू॰ षष्ठ शताब्दी है।

(xviii) महाभारतकार ने भगवान राम को ~~अव~~ विष्णु का अवतार माना है और क्रम में श्रीकृष्ण से पूर्व रखा है। इसके अतिरिक्त अपने ~~विश्व~~ काव्य में उन्होंने आदिकवि वाल्मीकि का नाम बड़े आदर के साथ लिया है। इस प्रकार महाभारत रामायण के

Scanned with CamScanner

बाद की रचना है।

महाभारत के कालनिर्णय के सम्बन्ध में कतिपय महत्त्वपूर्ण तथ्य →

(i) आर्यभट्ट, जिनकी वैज्ञानिक खोजों से आज का वैज्ञानिक समाज भी अभिभूत है, ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि जब वे 23 वर्ष के थे उस समय कलियुग के 3600 वर्ष व्यतीत हो चुके थे। इस दृष्टि से कलियुग का आरम्भ 3102 ई०पू० में हुआ। महाभारत की रचना इससे पूर्व हो चुकी थी।

(ii) सूर्यसिद्धान्त के अनुसार भी कलियुग का आरम्भ 3102 ई०पू० में हुआ था।

(iii) वैज्ञानिकों ने उस समय की आकाशीय स्थिति के आधार जिसमें महाभारत में वर्णित सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण भी शामिल है के आधार पर महाभारत युद्ध के समय को जानने का प्रयत्न किया है। इन वैज्ञानिक आधारों के सम्यक् विश्लेषण के पश्चात् यह परिणाम सामने आया है कि महाभारत युद्ध अगस्त 3129 ई०पू० में हुआ था।

निष्कर्ष : उपर्युक्त तथ्यों के विवेचन से स्पष्ट है कि महाभारत की रचना महात्मा बुद्ध के जन्म से पूर्व तथा वाल्मीकि रामायण के बाद हुई। पहले इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि महाभारत की रचना किस कालखण्ड में हुई। भारतीय परम्परा यह मानती है कि कलियुग का आरम्भ 3102 ई०पू० में कलियुग का आरम्भ हुआ और इससे पूर्व महाभारत का प्रणयन हो चुका था।

अब तो पुरातात्त्विक, ऐतिहासिक अभिलेख एवं वैज्ञानिक विश्लेषण भी इसी ओर संकेत करते हैं। चाहे पुलकेशिन का एहोल अभिलेख हो या यूनानी राजदूत मेगस्थनीज का ऐतिहासिक अभिलेख महाभारत का समय

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

3000 ई० पू० ही ठहरता है। अब तो वैज्ञानिकों के भी एक समूह ने इसपर अपनी मुहर लगा दी है।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner